પ્રાણી માત્રના કલ્યાણ માટે મોરબીના આંગણે પર્યાવરણ શુદ્ધિ અને વૃષ્ટિ યજ્ઞ

સમસ્ત જીવજગતના કલ્યાણ માટે પરમેશ્વરે આ સૃષ્ટિની રચના કરી છે. તમામ જીવ સુખમય જીવન જીવી શકે એ માટે સૃષ્ટિકર્તા પરમેશ્વરે પ્રાકૃતિક પદાર્થો જળ, વાયુ, વનસ્પતિ વગેરે પૂરતા પ્રમાણમાં આપ્યા છે. પરંતુ ભૌતિક ઉન્નતિની આંધળી દોટમાં અટવાયેલો માણસે પોતાના જીવન આધાર એવા પ્રાકૃતિક તત્વોનું એટલી હદે દોહન કર્યુ છે કે તે તત્વો અસંતુલિત અવસ્થાએ પહોંચી ગયા છે. જેનું પરિણામ અનાવષ્ટિ (દુષ્કાળ), અતિવૃષ્ટિ કે વાવાઝોડાં સ્વરૂપે આપણે ભોગવીએ છીએ.

અશુદ્ધ અને અસંતુલિત પર્યાવરણને સંતુલિત કરવાનો ઉત્તમ માર્ગ યજ્ઞ (અગ્નિહોત્ર) છે. આપણાં ઋષિ-મુનિઓએ દરેક મનુષ્યોંને દૈનિકયજ્ઞ કરવાની પ્રેરણા આપી છે. કાળક્રમે આપણી દિનચર્યામાંથી અગ્નિહોત્ર ભુલાઇ ગયો. અને તેથી પ્રતિદિન જળ-વાયુની શુદ્ધિનું નિયમિત ચાલતું ચક્ર બંધ થયું જેના પરિણામે અનાવૃષ્ટિ, અતિવૃષ્ટિ જેવી આપદાઓના ડરામણા ઓછાયા આપણાં ઉપર પડવા લાગ્યા.

ચાલુ વર્ષે વર્ષાઋતુનાં દિવસો વિતતા જાય છે, અને આપણે ચાતક નજરે વરસાદની રાહ જોઇ રહ્યા છીએ. ત્યારે સર્વકલ્યાણ અર્થે પર્યાવરણ શુદ્ધિ અને વૃષ્ટિ યજ્ઞનું આયોજન મોરબીના આંગણે કરવામાં આવેલ છે. ઋષિ-મુનિઓ દ્વારા બતાવેલ વિધિ-વિધાન મુજબની સામગ્રી, સમિધા અને શુદ્ધ ઘીની વૈદિક મંત્રોચ્ચાર સાથે યજ્ઞવેદીમાં આહુતિઓ આપવામાં આવશે.

યજ્ઞમાં યજમાન બનવા-સહયોગ આપવા જાહેર આમંત્રણ છે.

યજ્ઞ સ્થળ :

યજ્ઞ સમય :

તારીખ થી તારીખ સુધી :

યજ્ઞમાં નીચે મુજબ હુત દ્રવ્યોની આહુતિઓ આપવામાં આવશે.

ગાયનું શુદ્ધ ઘી આશરે કિલો.

वेदों की ओर लौटों

सार्थक करने

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने आरम्भ किया अभियान...

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी समस्याओं का समाधान पाने विश्व को सन्देश दिया था – **वेदों की ओर लौटों!**

ऋषि की इस प्रेरणा को साकार रूप देने का प्रयास गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने आरम्भ किया है। गुजरात के अधिकतम गाँवों को वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का परिचय कराने का अभियान चलाने की योजना बनाई गई है। तदनुसार प्रारम्भिक दौर की जिम्मेदारी आर्यसमाज सुरेन्द्रनगर ने उठाई है। इस जिल्ले के ६२८ गाँव हैं। और ९ तहसिलें हैं। जिनमें से एक तहसिह वढवाण है। जिसके सभी ४६ गाँवों में वैदिक नाद गुंजाने का कार्य पूर्ण हुआ। कार्य का स्वरूप ऐसा रखा गया कि वेदरथ लेकर एक मण्डली हर गाँव में जाय, शोभायात्रा और सार्वजनिक स्थान पर सभा करें। लोगों को वेदों के बारे में बतायें। हर ५–६ गाँव की ईकाई बनाई गईं। और उन ईकाइयों का एक – एक मुखिया नियुक्त कर उनको उस क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई। गाँव में जाने का दिन व समय पूर्व सूचित कर दिया गया। ग्रामीण क्षेत्र के लोग बडी श्रद्धा के साथ वेदरथ और वेद सन्देश वाहकों का स्वागत् करने तत्पर रहते थे।

जिस गाँव रात्रि निवास होता वहाँ रात्रि कालीन विशेष धर्मसभा रहती थी। और दूसरे दिन उस गाँव में प्रात:काल योग शिक्षा दी जाती । तत्पश्चात यज्ञ होता था। जिसमें गाँव के लोग उपस्थित होकर अपनी आस्था का परिचय देते थे।

इस यात्रा में वेदों को स्वीकार करने वाले प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को और उन–उन सम्प्रदायों के संतो–महंतो को भी साथ रखने का प्रयास किया गया। जो काफी हद तक सकारात्मक रहा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेद प्रचार यात्रा का नाम **सनातन वैदिक धर्म संस्कार यात्रा**।

वढवाण तहसिल की यात्रा सम्पन्न होने पर समापन कार्यक्रम दिनांक ६ – जून – २०१४ को रखा गया। जिसकी अध्यक्षता प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल ने की । इस समापन कार्यक्रम में प्रत्येक गाँव के प्रमुख व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया और हर गाँव में चारों वेद संहिता की एक प्रत व ऋषिवेदादि भाष्य भूमिका भेंट स्वरूप दी गई ।

इस समापन कार्यक्रम की विशेषता यह रही की वेदों को एकाधिक रथों में रखकर शहर में शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें प्रत्येक गाँव से आए हुए श्रद्धालु लोंग शामिल हुए।

समापन कार्यक्रम में स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संत श्री पी. पी. स्वामी, गौभक्त श्री कालिदास बापू, महंत श्री रामनारायण शास्त्री, टंकारा से आचार्य रामदेव शास्त्री, विश्व हिन्दू परिषद, गायत्री परिवार, स्वाध्याय परिवार, पतंजलि योग समिति, ब्रह्माकुमारी आदि के प्रतिनिधि उपस्थित रहें और वेदों के प्रति अपने भाव व्यक्त किये। एवं इस वेद प्रचार अभियान चलाने पर आर्यसमाज को बढाई दी। समापन कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कमलेश कुमार शास्त्रीने किया।

संपूर्ण वेद प्रचार यात्रा का संयोजन आर्यसमाज सुरेन्द्रनगर के प्रधान श्री आचार्य आर्य बन्धु जी ने बडे मनोयोग से किया।

वेदों की ओर लौटों

सार्थक करने

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने आरम्भ किया अभियान...

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी समस्याओं का समाधान पाने विश्व को सन्देश दिया था – **वेदों की ओर लौटों!**

ऋषि की इस प्रेरणा को साकार रूप देने का प्रयास गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने आरम्भ किया है। गुजरात के अधिकतम गांवों को वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का परिचय कराने का अभियान चलाने की योजना बनाई गई है। तदनुसार प्रारम्भिक दौर की जिम्मेदारी आर्यसमाज सुरेन्द्रनगर ने उठाई है। इस जिल्ले के ६२८ गांव हैं। और ९ तहसिलें हैं। जिनमें से एक तहसिह वढवाण है। जिसके सभी ४६ गांवों में वैदिक नाद गुंजाने का कार्य पूर्ण हुआ। कार्य का स्वरूप ऐसा रखा गया कि वेदरथ लेकर एक मण्डली हर गांव में जाय, शोभायात्रा और सार्वजनिक स्थान पर सभा करें। लोगों को वेदों के बारे में बतायें। हर ५–६ गांव की ईकाई बनाई गई। और उन ईकाइयों का एक–एक मुखिया नियुक्त कर उनको उस क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई। गांव में जाने का दिन व समय पूर्व सूचित कर दिया गया। ग्रामीण क्षेत्र के लोग बडी श्रद्धा के साथ वेदरथ और वेद सन्देश वाहकों का स्वागत् करने तत्पर रहते थे।

जिस गांव रात्रि निवास होता वहां रात्रि कालीन विशेष धर्मसभा रहती थी। और दूसरे दिन उस गांव में प्रात:काल योग शिक्षा दी जाती। तत्पश्चात यज्ञ होता था। जिसमें गांव के लोग उपस्थित होकर अपनी आस्था का परिचय देते थे।

इस यात्रा में वेदों को स्वीकार करने वाले प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को और उन–उन सम्प्रदायों के संतो–महंतो को भी साथ रखने का प्रयास किया गया। जो काफी हद तक सकारात्मक रहा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेद प्रचार यात्रा का नाम **सनातन वैदिक धर्म संस्कार यात्रा**।

वढवाण तहसिल की यात्रा सम्पन्न होने पर समापन कार्यक्रम दिनांक ६ – जून – २०१४ को रखा गया। जिसकी अध्यक्षता प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल ने की। इस समापन कार्यक्रम में प्रत्येक गांव के प्रमुख व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया और हर गांव में चारों वेद संहिता की एक प्रत व ऋषिवेदादि भाष्य भूमिका भेंट स्वरूप दी गई।

इस समापन कार्यक्रम की विशेषता यह रही की वेदों को एकाधिक रथों में रखकर शहर में शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें प्रत्येक गांव से आए हुए श्रद्धालु लोंग शामिल हुए।

समापन कार्यक्रम में स्वामीनारायण सम्प्रदाय के संत श्री पी. पी. स्वामी, गौभक्त श्री कालिदास बापू, महंत श्री रामनारायण शास्त्री, टंकारा से आचार्य रामदेव शास्त्री, विश्व हिन्दू परिषद, गायत्री परिवार, स्वाध्याय परिवार, पतंजलि योग समिति, ब्रह्माकुमारी आदि के प्रतिनिधि उपस्थित रहें और वेदों के प्रति अपने भाव व्यक्त किये। एवं इस वेद प्रचार अभियान चलाने पर आर्यसमाज को बढाई दी। समापन कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कमलेश कुमार शास्त्रीने किया।

संपूर्ण वेद प्रचार यात्रा का संयोजन आर्यसमाज सुरेन्द्रनगर के प्रधान श्री आचार्य आर्य बन्धु जी ने बडे मनोयोग से किया।